रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह प्रणीत अनूठे संगीत ग्रंथ

मौलश्री सिंह
शोधार्थी, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़, छत्तीसगढ़

प्रो. डॉ. मांडवी सिंह
कुलपति, भातखण्डे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तरप्रदेश

सार-संक्षेप

इतिहास में ऐसे कई शासक व विद्वान रहे जिन्होंने संगीत नृत्य के उत्थान एवं विकाष हेतु अपना सर्वस्य लगाया है। जयपुर के माधोसिंह, लखनऊ के वजीदअलिशाह ऐसे ही एक महान गोंडवंशी राजा रहे राजा चक्रधर सिंह। जिन्होंने संगीत नृत्य के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दिया। राजा बनने के बाद से उन्होंने अपने धन कोष का बहुत ही बड़ा हिस्सा खर्च कर बड़े-बड़े विद्वानों, गुरुओं, कलाकारों आदि से ज्ञान अर्जित करने में लगाया और उसका संकलन किया। अन्य ग्रंथों से ज्ञान अर्जित कर एक नए ग्रंथ की रचना की। कथक नृत्य के प्रकास में आने के 100-200 वर्षों के बाद भी इसके शास्त्रीय स्वरूप को लेकर कोई प्रमाणिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं थे। राजा चक्रधर सिंह जी ने इस कार्य को महान कलाकारों और संगीत के प्राचीन ग्रंथों के आधार पर नर्तनसर्वस्वम् जैसे ग्रंथों की रचना कर पूर्ण किया। यह कार्य संगीत तथा नृत्य के प्रति उनके समर्पण तथा उत्साह को दर्शाता है। अल्पायु में मृत्यु होने से उनका यह महान कार्य अधूरा रह गया। कुल पाँच ग्रंथों में से केवल तीन ही पूर्ण हो सके बाकी दो ग्रंथों की समाग्री तो एकत्र हो चुकी थी किन्तु लेखन कार्य पूर्ण ना हो सका। राजा साहब द्वारा रचित मुख्यतः संगीत नृत्य के कथक नृत्य पर आधारित अधिक रचनाएँ देखने को मिलती है। इस ग्रंथ में तत्कालीन समय के सुप्रसिद्ध संगीताचार्यों एवं उस्तादों की बंदिशों को भी संकलित किया गया है। नर्तनसर्वस्वम् की समाग्री उपलब्ध ना होने के कारण महाराजा चक्रधर सिंह जी के चिंतन को उनकी रचनाओं के आधार पर देखा जा सकता है। नर्तनसर्वस्वम् ही ऐसा ग्रंथ है जिसमें उल्लेखित अनेक रचनाएँ वर्तमान स्थिति में लोगों को उपलब्ध है। ग्रंथ रचना के विषय में शोधकर्ता द्वारा मुख्य और प्रमाणिक जानकारी एकत्र कर इस लेख में उपलब्ध की गई है।

मुख्य शब्द : संगीत, नृत्य, रायगढ़, राजा, ग्रंथ।

शोध-पत्र

शोध समस्या—शोध प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्रथम चरण शोध समस्या का चुनाव एवं सही निर्माण करना है। सैद्धांतिक या व्यवहारिक रूप में शोध समस्या वह कठिनाई है जिसका समाधान शोधकर्ता अपने अध्ययन द्वारा प्राप्त करता है। शोधकर्ता द्वारा चुने गए विषय में रायगढ़ दरबार में हुए संगीत नृत्य के मौलिक कार्यों को प्रदर्शित किया गया है। जिसका सबसे बड़ा लाभ कथक नृत्य को मिला।

अध्ययन का उद्देश्य—इस प्रपत्र लेखने हेतु शोधकर्ता के निम्न उद्देश्य है—

1. नर्तनसर्वस्वम् जैसे महान ग्रंथों व उनकी अन्य रचनाओं को लोगों तक पहुँचाना।
2. राजा चक्रधर सिंह जी की रचनाओं का मूल अर्थ व उनकी जीवन शैली को दर्शाते हुए लोगों को संगीत नृत्य के प्रति इनका प्रेम, लगन व जीवन भर की तपस्या से अवगत कर प्रेणा दिलाना।
3. नृत्य के मूल रूपों की रक्षा करते हुए नवीनीकरण को प्रोत्साहन देना।
4. गहन अध्ययन करके इनकी नवीन सोच व रचनाओं को प्रदर्शित करना।
5. कथक नृत्य के रायगढ़ घराने का प्रचार-प्रसार करना।

अध्ययन की प्रासंगिकता—चुना गया विषय संगीत नृत्य के वर्तमान स्वरूप से सुसंगत और सार्थक है। रायगढ़ दरबार में हुए संगीत नृत्य के उत्थान का कथन होने के साथ ही नवीनप्रयोगों द्वारा नई अवधारणों का विकास हुआ है जो वर्तमान में कलाकारों के बीच प्रचलित है।

शोध पद्धति—इस शोध हेतु शोधकर्ता द्वारा ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग किया गया है। जिससे अतीत के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान घटनाओं

का अध्ययन कर भविष्य में इनकी सार्थकता का ज्ञात करवाया गया है। पूर्व में हुए रायगढ़ दरबार में रचनात्मक घटनाओं या विचारों के बारे में आधार सामग्री का संग्रह कर उसका व्याख्यान किया गया है। जिससे यह पता लगाया जा सके की उन्होंने वर्तमान घटनाओं और विचारों को कैसे प्रभावित किया और भविष्य में इसके और कैसे प्रभाव देखने को मिल सकते है।

परिणाम–प्रस्तावित विषय के परिणाम निम्नलिखित है:-

1. उपयोगिता और सार्थकता।
2. संगीत नृत्य के मूल तत्वों का बचाव होने के साथ ही नवीनता में वृद्धि।
3. नए अवधारणा का प्रचार-प्रसार।
4. संभावित है इस शोध से नए ज्ञान की प्राप्ति होगी।

शोध पत्र

महाराष्ट्र प्रदेश में स्थित चांदा का गोंड राज वंश बहुत प्रसिद्ध और प्राचीन माना जाता है। मदन सिंह इसी राजवंश के एक व्यक्ति थे, जिन्होंने मैकल पर्वतमाला के शृंखलाओं से घिरा रायगढ़ रियासत को स्थापित किया। आगे इनके ही वंश में एक महान राजा का जन्म हुआ। रायगढ़ रियासत को कला के क्षेत्र में राष्ट्रीय पहचान दिलाने वाले राजा चक्रधर सिंह का नाम संगीत जगत में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के नाम में उल्लेखित है। इनका जन्म 19 अगस्त सन् 1905 में गणेश चतुर्थी के दिन रायगढ़ रियासत के नवे राजा भूपदेव सिंह के द्वितीय पुत्र के रूप में हुआ। गोंडवंशी होने के कारण संगीत के प्रति इनका रुझान बालपन से ही था। इनके पिता जो स्वयं एक कला प्रेमी थे चक्रधर सिंह जी के जन्म के उपलक्ष में इन्होंने दो महत्त्वपूर्ण कार्य करवाए पहला 'गणेश मेला' का आयोजन और दूसरा 'चक्रधर मोती महल' का निर्माण। इनके शासन काल में संगीत जगत को एक नए आश्र्यदाता प्राप्त हुए। वे बेहद ही प्रतिभाशाली शासक थे। उनके समय में रायगढ़ रियासत विकसित हो रहा था। राजा भूपदेव सिंह जी की मृत्यु के पश्चात ज्येष्ट पुत्र नटवर सिंह जी राजा बने। किन्तु इनका शासन काल कुछ वर्षों का ही था। सन् 1924 में बड़ी ही कम उम्र में उनका निधन हो गया। इनकी मृत्यु के उपरांत चक्रधर सिंह जी राजा बने। संगीत नृत्य के विकास का कार्य तभी से प्रारंभ हुआ। इन्होंने कई कलाकारों की दरबार में नियुक्ति की। राजा साहब एक अच्छे कला पारखी होने के साथ-साथ एक कला साधक भी थे। उन्हे बालपन से ही कई बड़े संगीताचार्यों द्वारा तबला, पखावज, हार्मोनियम के साथ कथक नृत्य का भी प्रशिक्षण प्राप्त था। उनका स्वभाव सरल और कोमल था वे पूरे निष्ठा से कला के प्रति अपनी चिंता और सोच को बड़े-बड़े गुरुओं के समक्ष प्रकट करते। उनके विचार शोधपर्ख थे, जिस कारण उन्होंने ग्रंथों की रचना की। जिसमें उनका सहयोग करने हेतु कई संगीताचार्यों ने अपना अमूल्य समय और ज्ञान उनसे बाँटा।

चित्र क्र.1– राजा चक्रधर सिंह(तबले में संगत करते हुए)

चित्र क्र. 2– रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह

कलाकारों का आना-जाना रायगढ़ में लगा ही रहता था। देश का ऐसा कोई प्रख्यात संगीतकार और नृत्यकार नहीं है जिसने रायगढ़ आकर अपनी कला का प्रदर्शन और संवर्धन ना किया हो। कला नागरी के रूप में ख्याति प्राप्त रायगढ़ नगरी गणेश मेला के समय कलाकारों से भर जाती थी। प्रति दिन बड़े-बड़े कलाकार मंच में अपना प्रदर्शन कर दर्शकों को रसाभूत कर देते थे। राजा साहब को किसी कलाकार की कोई बन्दिश पसंद आती तो उसे लेखककार से कहकर लिखवा लिया करते थे और बदले में उस कलाकार को अच्छा-खासा ईनाम मिलता। संगीत नृत्य के कई गुणीजनों ने अपनी बंदिशे राजा साहब को खुशी-खुशी सोपी। इतनी सारी सामग्री एकत्र होने के बाद अन्य ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त कर उन्होंने 'नर्तनसर्वस्वम्' ग्रंथ का निर्माण किया। ''नर्तनसर्वसम ग्रंथ की उत्पति का आधार ग्रंथ विशाखदत्त प्रणीत 'नर्तनरहस्यम' ग्रंथ को माना गया है। इसका उल्लेख नर्तनसर्वस्वम् के प्रथम अध्याय में किया गया है''[1] उस समय की बात है जब सन् 1658-1707 नवाब औरंजेब के शासन में विशाखदत्त नाम के एक प्रकाण्ड पंडित हुए थे जिसे किसी कारण वश मृत्यु दण्ड की सजा दी गई अपने प्राणों की रक्षा के लिए राज्य की सीमा से भाग कर दियागड़ नामक स्थान में उसे शरण मिला। पंडित विशाखदत्त द्वारा यहा की दो राजकुमारियों चंद्रवती और इंदुमति को नृत्य की शिक्षा दी गई। रायगढ़ के निकट मिलूगाढ़ के राजा चन्द्र सिंह को अपने योग्य पुत्र के लिए एक सुयोग्य राजकुमारी की खोज थी। राजा के आदेश पर मंत्री ने नृत्य का कुशल प्रशिक्षण प्राप्त एवं रूप से रूपवती दीयागढ़ की राजकुमारी चंद्रवती का प्रस्ताव राजा के समक्ष रखा। उचित प्रयास के पश्चात राजकुमार का विवाह राजकुमारी चंद्रवती से सम्पन्न हुआ। राजकुमारी के साथ उनके गुरु शिवादत्त भी मिलूगाढ़ आए। गुरु शिवादत्त के साथ नृत्य का वृहद ग्रंथ नर्तनरहस्यम भी आया जो की उनके पिता पंडित विशाखदत्त द्वारा लिखी गई थी। आपसी शत्रुता के चलते रायगढ़ के राजा मदन सिंह ने मिलूगढ़ पर हमला कर विजय प्राप्त किया तब उन्हे वहाँ के खजाने से नृत्य का वृहद ग्रंथ नर्तनरहस्यम प्राप्त हुआ और ये ग्रंथ रायगढ़ रियासत के अधीन हो गया। उचित अवसर पर राजा चकरधर सिंह जी ने इस अभूतपूर्व ग्रंथ से प्रेणा ली और उन्होंने 'नर्तनसर्वस्वम्'

की रचना की। जो की रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह जी के सांगीतिक योगदान का एक मूल आधार है।

नर्तनसर्वस्वम् कथक नृत्य के प्रयोग पर आधारित प्रथम मूल ग्रंथ है। इसका वजन 6.5 किलो बतलाया गया है। ''इसमें एक हजार से भी अधिक पृष्ठ है, जिसमें 350 पृष्ठों की तो भूमिका ही है।''[4]

नर्तनसर्वस्वम् के लेखन हेतु रायगढ़ में विशेष व्यवस्था की गई थी। पृथक रूप से अनुकूल वातावरण युक्त एक कक्ष बनाया गया था इसके लेखन हेतु सारंगढ़ के लेखन कार्य में दक्ष पं. चिंतामणी कष्यप को नियुक्त किया गया था। जो हस्त लिखित कला केलिग्राफी में दक्ष थे। ग्रंथ के लेखन समाग्री का लेखा-जोखा श्री श्यामलाल पोतदार जी देखा करते थे। श्री चिंतामणी सन् 1935-1937 तक इस कार्य हेतु रायगढ़ में नियुक्त रहे। ग्रंथ लेखन से पूर्व राजा साहब सर्वप्रथम बन्दिश का निर्माण करते उसके बाद संगीताचार्यों के समक्ष उसे प्रस्तुत करते तब कलाकारों द्वार उस बोल पर अंग-अभिनय का प्रदर्शन अपने-अपने कला के आधार पर किया जाता तत्पश्चात तबले पर उसकी निकासी होती उसके बाद संगीत व नृत्य के आचार्यों से चर्चा उपरांत बोल को सहमति मिलती। राजा साहब के तबला वादन के साथ ही साथ कविगण उसे श्लोकबद्ध करते और चित्रकार मुद्राओं का अंकन करते, याने भाव प्रदर्शन नर्तन वादन के साथ ही साथ लेखन। जिस कवि का श्लोक तथा चित्रकार का चित्र सबसे अच्छा होता उसे सुनिश्चित करते, रजिस्टर में दर्ज करवाते और लेखन कक्ष में भेज देते। लेखन हेतु रंग व स्याही की व्यवस्था कलकता से करते थे। एक-एक पृष्ठ को विभिन्न रंगों से कलात्मक आकृति दी जाती थी। बंदिशों के आधार पर सुंदर चित्रण किया जाता जैसे—गजविलास त्रिचक्री परन में हाथी का चित्र, दलबदल परन में बादलों का चित्र, मुक्ताहार में हार का चित्र तथा उस चित्र पर कलात्मक रूप से बोलो का लेखन होता। लेखन का कार्य इतनी दक्षता और पूर्णता के साथ होता की इस ग्रंथ को तैयार करने में चौबीस वर्ष लग गए। लेखन कार्य में बनारस के पखावज के परषिद्ध कलाकार श्री कवि भूषण का भी संयोग रहा जो की पखावज के साथ-साथ स्वर-ताल व संस्कृत भाषा के भी जानकार थे। रायगढ़ दरबार से अभूतपूर्व लेखन प्रक्रिया में हिन्दी भाषा के अनुवाद आदि कार्य के लिए रायगढ़ राज्य के दीवान डॉ.बलदेव प्रसाद मिश्र का भी योगदान रहा तथा अन्य विद्वानों ने भी इसके लेखन हेतु अपना अमूल्य समय दिया।

3 वर्ष और 6 माह की अवधि में यह ग्रंथ 1938 में पूर्ण हुआ। राजा साहब का विशेष प्रयास रहा की संगीत नृत्य के सैद्धांतिक तत्वों को प्रयोग के साथ देखा जाए। उनका यह चिन्तन ग्रंथों में उल्लेखित है। 1936 में इलाहाबाद में आयोजियत संगीत समारोह में राजा साहब ने अपने द्वारा रचित ग्रंथ नर्तनसर्वस्वम् जो कथक नृत्य का सम्पूर्ण साहित्य है, को दर्शनार्थ रखा। जिसे देख कर सभी गुणीजन अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में संगीत नृत्य कला के बारे में व्याख्यान देते हुए कहा—''नृत्य को संगीत का बड़ा महत्त्वपूर्ण अंग समझना चाहिए। इसमें स्वर और ताल का साकार रूप खड़ा हो जाता है। नृत्य न केवल राग का मूर्तिमन्त उच्छवास है वरन वह मनोभावों की मुकभाषा भी है।''[5] इस कथन से संगीत नृत्य के प्रति राजा साहब के मन में उठे उत्साह साफ जाहीर हो जाते है। यह भी कारण रहा है की उन्होंने ग्रंथ लेखन के कार्य के हर एक पहलू को विशेष दृष्टि दी। ''लेखन कार्य के पश्चात इस ग्रंथ का बाईडिंग का कार्य लंडन में करवाया गया यह ग्रंथ काले रंग के मजबूत जिल्द से बंधा हुआ है। आवरण पृष्ठ में नर्तनसर्वस्वम् के नीचे राजा चक्रधर सिंह जी का नाम था उसके नीचे इसका समय सन् 1938 दिया गया है।''[2] यह मानना है की प्रत्येक पन्ने के कोने में सोने का रंग चढ़ाया गया है। जिससे वह ग्रंथ ना केवल सामग्री के दृष्टिकोण से अपितु दृश्यांकन में भी अमूल्य हो। सर्व विदित है की नर्तनसर्वस्वम् वर्तमान में लोगों को उपलब्ध नहीं है। इस ग्रंथ के अतरिक्त राजा साहब द्वारा संगीत नृत्य से संबंधित निम्न ग्रंथों की रचना भी हुई—

- तालतोयनिधि
- मुरजपर्णपुष्पाकर
- तालबलपुष्पाकर एवं
- रागरत्नमंजूषा

चित्र क्र.3- चिंतामणी कश्यप (ग्रंथों के लेखककार)

चित्र क्र.4- कुमार सुरेन्द्र बहादुर सिंह(बाई ओर)

पंडित श्रीमल(दाई ओर) ग्रंथों के साथ

तालतोयनिधि—यह ग्रंथ ताल प्रधान है। जिसमें 1 से 380 मात्राओं तक के तालों का चक्र रंगीन व आकर्षित रूप में बनाया गया है। यह ग्रंथ 32 किलो का है जिसमें कुल 2000 संस्कृत के श्लोकों सहित हिन्दी अनुवाद भी प्राप्त है। राकेन्दु 16 मात्र, मृदंग भूषण 50 मात्र, मणीकुण्डल 35 मात्र आदि तालों का विवरण प्राप्त होता है।

मुरजपर्णपुष्पाकर—इसे तालतोयनिधि के वजन का दूसरा दुर्लभ ग्रंथ माना गया है। जिसके लेखन में 3 वर्ष लगे। 'मुरज' अर्थात 'पखावज' और 'पर्ण' अर्थात 'परण'। इस ग्रंथ में कथक नृत्य के 400 से भी अधिक परणों का समावेश है। यह ग्रंथ नृत्य प्रधान ग्रंथ है। जिसे हरी और लाल जिल्द के दो खण्डों में बाँटा गया है तथा इसका स्वरूप सन्दूककलिनुमा बनाया गया है। जो देखने में आकर्षित है। राजा साहब अपने दरबार में आए बड़े-बड़े गुरुओं और विद्वानों को यह ग्रंथ बड़ी ही खुशी के साथ दिखते।

तालबलपुष्पाकर—तबले का इतिहास बताते हुए इस ग्रंथ में तबले की उत्पत्ति ताल और बल से मानी गई है। वास्तव में यह ग्रंथ तबले पर केंद्रित

है। तबले के मौलिक बंदिशों के साथ-साथ राजा साहब रचित बंदिशे भी इस ग्रंथ में है। किन्तु यह ग्रंथ अपूर्ण है।

रागरत्नमंजूषा–इस ग्रंथ में राजा साहब ने 1200 रागों का वंशवृक्ष बनवाया था तथा 6 राग और 36 रागिनियों का वर्णन प्राप्त होता है जिसमें इनकी परंपरा और नए प्रयोग का उल्लेख भी है। कहा जाता है की इससे सम्बंधित समाग्री का संकलन कर लिया गया था किन्तु लेखन कार्य पूर्ण ना हो सका। इस ग्रंथ के आधार संगीत के प्राचीन ग्रंथ जैसे–रागमाला, रागतिबोध प्रवेशिक, स्वरमेला कलानिधि आदि ग्रंथ रहे है।

यह स्पष्ट है की रायगढ़ दरबार में राजा चक्रधर सिंह जी द्वारा संगीत या नृत्य के तकनीक पर लिखे गए ग्रंथों का संदर्भ या आधारभूत ग्रंथ भारतीय संगीत और नृत्य परंपरा के प्राचीन ग्रंथ ही रहे है। जिससे उनके विचार तथा प्रयोगों की प्रमाणिकता अधिक सुदृढ़ होती है।

नर्तनसर्वस्वम् के अंग

'नर्तन', 'सर्वस्वम्' अर्थात नर्तन से जुड़े सभी अंगों का समावेश। नर्तन कह कर राजा साहब ने नृत्य का कोई विशेष विभाजन नहीं किया। इसकी सीमा असीमित करते हुए 'नर्तन' शब्द का चयन राजा साहब द्वारा किया गया होगा। जिसमें नाट्य, नत्त और नृत्य इन तीनों का समावेश होता है। वर्तमान समय में जिस प्रकार का कथक नृत्य देखने को मिलता है उसमे नत्त के बोलो में भी अर्थ निहित है वह संभवत नर्तन ही है। यह ग्रंथ केवल कथक के नर्तन की विविधताओ व उसके अंगों पर आधारित है।'' डॉ. पी. डी. आशीर्वादम के अनुसार इस ग्रंथ में 'कथक' या 'कत्थक' शब्द का उल्लेख कही भी प्राप्त नहीं होता'' ।[3] इसके पीछे राजा साहब का अपना चिन्तन व समझ हो सकता है या शायद कथक नृत्य को विस्तार देने हेतु ऐसा किया हो।

राजा साहब ना केवल संगीत और नृत्य के क्षेत्र में निष्णात थे बल्कि काव्य, साहित्य और भाषा का भी उन्हे अच्छा-खासा ज्ञान था। उन्होंने कथक नृत्य में प्रयोगी शब्दावली और उनके अर्थों के साथ संस्कृत व हिन्दी के शब्दों को जोड़ते हुए नई वर्णमाला रची जो उपयोगी होने के साथ ही समझने योग्य भी है। जिसमें तोड़ा को त्रोटक, चक्करदार को त्रिचक्री, आमद को उपोद्घात्त, ठेका को तालस्तंभ तथा तिहाई को त्रिकुटाक्षरी और त्रिवाचा कहा गया। कथक नृत्य में मुस्लिम प्रभाव पड़ने से नृत्य के कई शब्द उर्दू के है जैसे–आमद, फरमाईशी आदि। जिसका राजा साहब ने परिवर्तन कर उसे संस्कृत तथा हिन्दी वर्ण के शब्द बनाए। जिसका मूल कारण शायद अपनी भाषा के प्रति प्रेम या अपनी संस्कृति का बचाव करना हो। राजा साहब एक कल्पना प्रवण नृत्ययचार्य थे। नृत्य में उन्होंने सर्वथा अनूठे प्रयोग किए है। उन्ही के शब्दों में ''नृत्य के साहित्य में भी वृद्धि की बड़ी गुंजाइश है।''[6]

कथक नृत्य के शास्त्रों के लिए भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र और नंदिकेश्वर कृत अभियान दर्पण ही प्रचलन में रहे है किन्तु इन ग्रंथों की रचना के समय कथक नृत्य जैसा कोई शास्त्रीय नृत्य अस्तित्व में नहीं आया था। किन्तु 19वी शताब्दी के पूर्व ही कथक नृत्य की उत्पत्ति हो चुकी थी। राजा साहब को भी इस बात का ज्ञात था। इस नृत्य के अस्तित्व को और प्रमाणिक बनाने हेतु साथ ही केवल कथक नृत्य के आधारभूत ग्रंथ होने हेतु नर्तनसर्वस्वम् की रचना की गई होगी। जो मुख्यतः कथक नृत्य के लिए भविष्य में उपयोगी हो। राजा साहब के मृत्यु उपरांत यह ग्रंथ राजा की तीसरी पत्नी रानी लोकेश्वरी देवी के पास सन् 1977 तक रहा। रानी के देह पतन के बाद इसका संरक्षण राजा चक्रधर सिंह जी के दूसरे पुत्र कुमार सुरेन्द्र बहादुर सिंह ने किया। इसके बाद इन ग्रंथों का भार कुमार सुरेन्द्र बहादुर सिंह ने अपने पुत्र कुमार देवेन्द्र प्रताप सिंह को सौंप दिया। समय के साथ-साथ इन ग्रंथों की स्थिति जर्जर होती जा रही है। समय रहते अगर ग्रंथों का प्रकाशन ना हुआ तो पूरा संगीत जगत इस अभूतपूर्ण ज्ञान से अछूता रह जाएगा।

चित्र क्र.5- डॉ. पी.डी.आशीर्वादम(दाई ओर) उनके साथ बीच में कुमार सुरेन्द्र बहादुर सिंह और तबला वादक श्री मुकुंद भाले(बाई ओर) ग्रंथों के साथ

कथक रायगढ़ घराने का वर्तमान स्वरूप–रायगढ़ की कथक नृत्य शैली लखनऊ और जयपुर घराने की देन है जिसमें राजा साहब ने अपनी रचनात्मक सोच विचारों और कलात्मक दृष्टि का बहुत ही सुंदर समिश्रण किया। 'लखनऊ और जयपुर ये दोनों की जो खूबसूरती है, पक्का है की विद्वानों से भी बोला गया होगा की इस पर आप विचार करे और तब उन्होंने ये अंग, ये बोल बन्दिश किस तरह से होने चाहिए ये देखा फिर उन्होंने पुराने शास्त्र देखे। शास्त्र का सबसे बड़ा योगदान रहा उन्होंने खाली मूवमेंट पर या अंग पर काम नहीं किया, उन्होंने शास्त्र के साथ जो क्रियात्मक पक्ष है उसे जोड़ा, ये मिश्रण है रायगढ़'' ।[7] घरानेदार गुरुओं से अपने द्वारा निर्मित कथक के बोल बंदिशों में अंग व मुद्राओं को बैठना और तैयार किए गए शिष्यों को उनकी विशेषता के अनुसार बंदिशों को बाटना। आगे चलकर उन्ही शिष्यों ने उन बंदिशों को दुनिया के समक्ष प्रदर्शित किया और वर्तमान में भी उनके द्वारा तैयार किए गए शिष्यों में यह बंदिशे प्रचलन में है। रायगढ़ जो एक दरबार से घराने तक का सफर तै कर चुका है उसकी मूलता के प्रति आज भी चुनतिया देखने को मिलती है। किन्तु राजा साहब ने कथक नृत्य को कभी भी घराने में नहीं बाटा, उनकी सोच इससे परे थी। जिसका परिणाम हमे आज के कथक नृत्य में देखने को मिलता है। वर्तमान का कथक नृत्य एक स्वतंत्र नृत्य है। यह

शास्त्रबद्ध होने के साथ एक खुला स्वरूप दिखता है जिसमें नवीनता और प्रयोग की काफी गुंजाइश है। आज का कथक नृत्य राजा चक्रधर सिंह की देन है। हर घराने के बंदिशों की अपनी अलग खूबसूरती होती है आज के समय में कलाकारों द्वारा सभी घराने के बोल बंदिशों को प्रदर्शित किया जा रहा है। यह उस कलाकार और उसकी कलानिष्ठा पर निर्भर करता है की घराने की शैली को समझते हुए उन बंदिशों को प्रदर्शित करे। वर्तमान में यह कमजोरी देखने को मिलती है की बोल के अर्थ जाने बिना कलाकार उसे मंच पर प्रदर्शित करते है जिससे उन बोलो की खूबसूरती और अर्थ वही खत्म हो जाते है। क्या इसकी वजह गुरु की शिक्षा में कमी या शिष्य का चंचल मन है ? जो अर्थ की पर्वा ना करते हुए केवल सुंदरता को महत्त्व देता है।

डॉ. भगवान दास माणिक के कथन अनुसार–''हमारे रायगढ़ की शैली अलग है इसकी अपनी विशेषता है जो इसे अन्य घरानों से अलग करती है, आज के समय में रायगढ़ के बोलो का प्रचलन संगीत जगत में और भी बड़ता जा रहा है रायगढ़ का बोल करते तो है पर वह रायगढ़ का नाच नहीं करते, इस लिए बोलो के अर्थों के साथ कैसी मुद्रा हो और कैसे रस भाव होने चाहिए इसपर मेने एक किताब लिखी है कथक रायगढ़ घराना इसमें राजा साहब निर्मित बोलो को अर्थ सहित संकलित किया गया है।''[8] राजा साहब छत्तीसगढ़ में जन्मे गोंड राजा है जिनकी कला में भी छत्तीसगढ़ प्रान्त की खूबसूरती झलकती है। उनके द्वारा चुने गए शिष्य भी लोक कलाकार थे जिनकी कद-काड़ी, बोल-चाल और स्वरूप का कही ना कही असर रायगढ़ घराने की शैली में देखने को मिलता है। छत्तीसगढ़ के लोक नृत्य में जिस प्रकार ऐडी मार कर चाल चली जाति है वही ऐडी का उपयोग रायगढ़ के कथक नृत्य में गतनिकास के समय देखने को मिलता है जिसमें कलाकार एक मुद्रा धरण कर तरह तरह की निकासी अर्थात चाल चलता है। ठीक उसी प्रकार 'उपोद्घात अर्थात आमद में 'तत त्राम धा' के समय एक पैर से तत मार कर दोनों पैरों में सीधा उचकते हुए सम लेना यह उचकना भी लोक नृत्य की देन है जो केवल रायगढ़ घराने में देखने को मिलता है।''[9] वर्तमान में रायगढ़ की इस शैली का सही तरह से प्रदर्शन इस घराने के कलाकारों के नृत्य में देखने को मिलता है, जिसका प्रचार-प्रसार उनके द्वारा आज भी किया जा रहा है। संस्थागत रूप से भी कथक नृत्य विषय में रायगढ़ घराने के बोल बंदिशों को जोड़ा गया है तथा कार्यशाला और सेमीनार द्वारा इस शैली की शिक्षा सभी कलाकारों तक प्रबंधित करवाई जा रही है। डॉ.उपासना उपाध्याय द्वारा यूट्यूब जैसे अनलाइन प्लेटफॉर्म पर रायगढ़ के 21 बोलो का पढ़ंत सहित अंग संचालन भी अर्थों के साथ बताया गया है, जो सर्वजनकी रूप से सभी कलाकारों को प्राप्त हो सके। उनका यह 21 बोलो का संकल्प रायगढ़ के प्रचार-प्रसार हेतु किया गया है।[10]

निष्कर्ष

वास्तव में कथक नृत्य का जो स्वरूप हमे आज देखने को मिलता है उसका विकास रायगढ़ दरबार में हुआ। अन्य घराने की अपेक्षा इसे घराने की उपाधि बहुत समय बाद प्राप्त हुई। किन्तु कथक नृत्य के शास्त्रीय स्वरूप के अभाव की पूर्ति भी रायगढ़ दरबार में ही हुई। ग्रंथों का निर्माण कर कथक नृत्य को प्रामाणिकता के साथ-साथ शास्त्र-सम्मत रूप प्रदान किया गया। अंग्रेजों के शासनकल में जो संकट कला व संस्कृति को घेरे रखा था उससे संरक्षण प्रदान कर उसका बचाव करने में कई कला साधकों और राजाओं ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिए है। जिसमें से एक रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह जी भी रहे। राजा साहब के संरक्षण में कथक नृत्य को फलने-फूलने का यथेष्ट अवसर प्राप्त हुआ। जिसका परिणाम वर्तमान में देखने को मिलता है। वर्तमान में उपलब्ध जानकारी का श्रेय डॉ. पी.डी.आशीर्वादम जैसे व्यक्ति जिन्होंने सर्वप्रथम रायगढ़ दरबार के विषय में कार्य किया तथा रायगढ़ घराने के उन गुरुओं और कलाकारों को जाता है जिन्होंने अपने ज्ञान को बाटा और उसे विलुप्त होने से बचाया। रायगढ़ घराने के कलाकारों द्वारा नर्तनसर्वस्वम् ग्रंथ के मूल तत्वों को प्रयोग में लाया जाता है। अगर अन्य कलाकारों द्वारा भी यह शास्त्र प्रयोग में लाए जाए तो यह कथक नृत्य के साथ-साथ फलता-फूलता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. Ashirwadam, P.D, Raigarh Darbar, Agam Kala Prakashan, Delhi, 1990 Pg no.97
2. Ashirwadam, P.D, Raigarh Darbar, Agam Kala Prakashan, Delhi, 1990 Pg no.105
3. Ashirwadam, P.D, Raigarh Darbar, Agam Kala Prakashan, Delhi, 1990 Pg no.121
4. प्रसाद, बलदेव, रायगढ़ का सांस्कृतिक वैभव, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकैडमी, रायपुर, पृ.109
5. प्रसाद, बलदेव, रायगढ़ का सांस्कृतिक वैभव, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकैडमी, रायपुर, पृ.130
6. प्रसाद, बलदेव, रायगढ़ का सांस्कृतिक वैभव, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकैडमी, रायपुर, पृ.132
7. साक्षात्कार, अल्पना बाजपेई, भोपाल मध्यप्रदेश, 12 दिसम्बर 2022
8. साक्षात्कार, भगवान दास माणिक, ग्वालियर मध्यप्रदेश, 24 अगस्त 2024
9. साक्षात्कार, पद्मविभूषण रामलाल बरेठ, बिलासपुर छत्तीसगढ़, 27 अक्टूबर 2023
10. साक्षात्कार, उपासना उपाध्याय, जबलपुर मध्यप्रदेश 15 दिसम्बर 2022